प्रकाशन क्रमांक/काजरी-केवीके/पी.स. - 15/11

सरसों की फसल में पौध संरक्षण

डॉ. ए. एस. तोमर
डॉ. आर. एस. त्रिपाठी
डॉ. (श्रीमती) शर्मिला राय
डॉ. आर.पी. सिंह
वी. के. बड़गुजर
पी. एस. भाटी
एम. सी. भण्डारी

सौजन्य से

पौध संरक्षण इकाई

केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान

जोधपुर (राज.)

भाकृअनुप
ICAR

१७५

सरसों की फसल में पौध संरक्षण

सरसों राजस्थान में उगाई जाने वाली रबी की एक महत्वपूर्ण फसल है। फसल पर कीटों एवं रोगों का प्रकोप होने से पैदावार पर विपरीत असर पड़ता है तथा दानों में भी तेल की मात्रा में कमी हो जाती है। अतः सरसों की फसल को नुकसान पहुँचाने वाले कीटों एवं रोगों की पहचान तथा उनका समन्वित प्रबन्ध का सही ज्ञान किसानों को होना अति आवश्यक है।

☞ सरसों की फसल में कीट समस्या

सरसों की फसल को चितकबरा कीट (पेन्टेड बग), आरा-मक्खी कीट (मस्टर्ड सा फ्लाई) तथा मोयला कीट (मस्टर्ड एफीड) द्वारा अत्यधिक नुकसान होता है। चितकबरा कीट भूरे या काले रंग का तथा उसके शरीर के ऊपरी हिस्से पर संतरीया या लाल-पीले रंग के धब्बे पाये जाते हैं। इस कीट का प्रकोप फसल की बुवाई के समय से लेकर नवम्बर तक तथा मार्च से फसल की कटाई तक अधिक होता है। यह कीट पौधों से रस चूसकर नुकसान पहुँचाता है। जबकि आरामक्खी कीट संतरी-पीले रंग की तथा पंख धुआँ के रंग के काली धारियाँ लिए हुए होते हैं तथा मादा कीट का पिछला भाग आरी के समान होता है। इस कीट का प्रकोप फसल की बुवाई से लेकर नवम्बर तक पाया जाता है। इस कीट की लटें शुरु में पत्तियों में गोल छेद करके तथा बाद में पत्तियों को किनारों से खाकर नुकसान पहुँचाती हैं। मोयला कीट छोटे, नाशपाती की रचना लिए हुए हरे या पीले-हरे रंग का होत है। इसका प्रकोप दिसम्बर से मार्च तक अधिक होता है तथा यह कीट पौधों के विभिन्न भागों से रस चूसकर नुकसान पहुँचाता है।

चितकबरा कीट नियन्त्रण के लिए खेत में तथा खेत के आस-पास फसल अवशेषों को जला कर नष्ट कर दें, फसल को खरपतवार रहित रखें, सम्भ हो सके तो गर्मियों में खेत की जुताई करें, सरसों की बुवाई के तीन से चा सप्ताह के बाद ही पहली सिंचाई करें तथा इस कीट का प्रकोप होने प एन्डोसल्फॉन 4% या क्यूनालफॉस 1.5% कीटनाशक पाउडर की 25

किलोग्राम मात्रा प्रति हैक्टेयर के हिसाब से फसल पर भुरकाव करें। उपरोक्त कीटनाशक पाउडर के स्थान पर मैलाथियान 50ई.सी. दवा की आधा लीटर मात्रा या एन्डोसल्फॉन 35 ई.सी. दवा की 625 मिली लीटर मात्रा प्रति हैक्टेयर का छिड़काव किया जा सकता है। आरा- मक्खी कीट नियंत्रण के लिए सरसों की फसल में समय पर निराई-गुड़ाई करें, फसल में समय पर सिंचाई करें तथा कीट का प्रकोप होने पर मिथाइल पैराथियॉन 2% या क्यूनालफॉस 1.5% कीटनाशक पाउडर की 25 किलोग्राम मात्रा प्रति हैक्टेयर फसल पर भुरकाव करें। उपरोक्त कीटनाशक पाउडर के स्थान पर मैलाथियॉन 50 ई.सी. दवा की आधा लीटर मात्रा या एन्डोसल्फॉन 35 ई.सी. दवा की 625 मिलीलीटर मात्रा प्रति हैक्टेयर का छिड़काव कर सकते हैं। मोयला कीट का प्रकोप सरसों की फसल पर कम हो इसके लिए सरसों की बुवाई अक्टूबर के मध्य तक करें, सन्तुलित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करें तथा आवश्यकता पड़ने पर मिथाइल पैराथियॉन 2% या मैलाथियॉन 5% कीटनाशक पाउडर की 25 किलोग्राम मात्रा प्रति हैक्टेयर के हिसाब से फसल पर भुरकाव करें। कीटनाशक पाउडर के स्थान पर ऑक्सीडेमिटोन मिथाइल 25 ई.सी. या डायमिथोएट 30 ई.सी. दवा की एक लीटर मात्रा या एन्डोसल्फॉन 35 ई.सी. या मैलाथियॉन 50 ई.सी. दवा की सवा लीटर मात्रा प्रति हैक्टेयर के हिसाब से पानी में घोल बना कर फसल पर छिड़काव करना भी लाभप्रद होता है।

☞ सरसों की फसल में रोग समस्या

सरसों की फसल में झुलसा, सफेद रोली, छाछ्या इत्यादि रोगों का अत्यधिक प्रकोप होता है। झुलसा रोग से प्रभावित सरसों के पौधों की पत्तियों, तनों तथा फलियों पर हल्के-भूरे से काले रंग के गोल धब्बे बन जाते हैं। सफेद रोली रोग में पत्तियों की निचली सतह पर छोटे-छोटे सफेद धब्बे फफोलों के रूप में बनते हैं। छाछ्या रोग से प्रभावित पौधों की पत्तियों, तनों तथा फलियों पर मटमेले सफेद रंग के गोल चूर्णी धब्बे बनते हैं तथा अत्यधिक रोग का प्रकोप होने पर सफेद पाउडर पूरी पत्तियों पर दिखाई देने लगता है।

सरसों की फसल में झुलसा रोग की रोकथाम के लिए रोगग्रसित पौधे को जलाकर नष्ट करें, सरसों की फसल की बुवाई अक्टूबर के पहले पखवाड़े में करें तथा आवश्यकता पड़ने पर मैन्कोजेब फंफूदीनाशी दवा की 2 किलोग्राम मात्रा प्रति हैक्टेयर के हिसाब से पानी में घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करें। सफेद रोली रोग के रोकथाम हेतु सम्भव हो तो गर्मियों में खेत की जुताई करें, फसल चक्र अपनाएं, रोगग्रस्त फसल के अवशेषों को जला कर नष्ट करें, रोग से प्रभावित पौधों के दानों को बीज के रूप में काम में नहीं लें, रोग-रोधी किस्मों की बुवाई करें, मैन्कोजेब फंफूदीनाशी दवा की 2 ग्राम मात्रा प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से बीज उपचार अवश्य करें तथा आवश्यकता पड़ने पर डायथेन एम-45 दवा की 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी के हिसाब से फसल पर छिड़काव उपयुक्त होता है। छाछया रोग के रोकथाम के लिए सरसों की बुवाई सही समय पर करें तथा रोग से प्रभावित फसल पर घुलनशील गन्धक की 2 किलोग्राम मात्रा या कार्बेन्डिजिम दवा की आधा किलोग्राम मात्रा प्रति हैक्टेयर के हिसाब से पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना लाभदायक होता है।

☞ पौध संरक्षण से सम्बन्धित अन्य महत्वपूर्ण जानकारी

1. खेत में दीमक की समस्या हो तो बुवाई से पहले एन्डोसल्फॉन 4% या क्यूनालफॉस 1.5% कीटनाशक पाउडर की 25 किलोग्राम मात्रा प्रति हैक्टेयर के हिसाब से खेत की भूमि में मिलाएं।
2. सरसों की फसल में रोगों का प्रकोप कम करने के लिए बुवाई से पहले बीज को थाइरम या वेविस्टीन या केप्टान नामक दवा से बीज उपचार अवश्य करें।
3. सरसों की फसल को पाले से बचाने के लिए गन्धक के तेजाब 0.1% का छिड़काव फसल पर किया जा सकता है।

सौजन्य से

पौध संरक्षण इकाई

केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान

जोधपुर (राज.)

फोन : 0291-2741907